

m- WP c Î



ü` †q
 71



0...gšx g†nv` q
 Avgv†K Rev†e etj b,
 knx` †Pqvi g`vb †Zv
 Ggwc †bRv†gi bvg
 etj bvB i aygvi "d
 †bRv†gi bvg
 etj †Q...0



‘আর আধা ঘন্টা
 দেরি করলেই
 রাজাকাররা
 আমাকে মেরে
 ফেলতো’

- we†kl c0Z†e` b : Qv†j x†Mi m†šj b
 hviv Avm†Qb †bZ†Zj - 15
- GKvEi : iYv††bi †P†W - 80
- k†āi mxgvbv : te† Ae nvU© - 75
- AvšR†ZK : 0gy†0 Biv†Ki nvj - 84
- c†h†† : nvj D†W Z` we†vU - 85
- Ab†vb : Z` †P† c0 Rbx l gy† Av†j vPbv - 87
- c†vm - 88 ■ i ††† i v†† - 78
- ü` q Rv†j v - 93 ■ we††† b - 95



‘স্বাধীনতা তুমি’ ও
 ‘তোমাকে পাওয়ার জন্যে,
 হে স্বাধীনতা’
 কবিতার জন্মকথা
 শামসুর রাহমান